International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के ललित निबन्धों का विकास और विश्लेषण

श्रीमती सन्तोष
हिन्दी विभाग
E-mail: suman14narwal@gmail.com

शोध आलेख सार– वस्तुतः हिन्दी निबन्ध साहित्य में हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ललित निबन्धों की विकास यात्रा में उन्होंने उपयोगी प्रयास किये हैं। प्रवाहमयी भाषा के बल पर उन्होंने विनोद भावों को कबीरदास की तरह अमली जामा पहनाया है जो पाठकों को मंत्र मुग्ध कर देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबन्धों के विकास का विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द– निबन्ध साहित्य, ललित निबनध, प्रवाहमयी भाषा, उपयोगी सन्देश।

भूमिका– हिन्दी निबन्ध– साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का आगमन एक क्रान्तिकारी घटना कही जा सकती है। विशेष रूप से ललित निबन्धों की विकास यात्रा में। उन्होंने हिन्दी को विशुद्ध निबन्ध दिये है, जिनमें तुच्छ से तुच्छ विषय भी द्विवेदी के बौद्धिक विलास का सहारा पाकर अत्यन्त उपयोगी सन्देश देने में समर्थ हो सके हैं। (जैसे नाखून क्यों बढते हैं आदि) कबीर का सा फक्कडपन और व्यंग्य विनोद भावों का अविगमयी प्रवाह जिनमें मुहावरों, लोकोक्तियों प्रतीकों और उपयुक्त शब्दों का अनायास प्रयोग होता है। पांडित्य के बोझ से मुक्त सर्वत्र एक सहज रोमांचकारी सम्मोहन–पाठकों को अपने अद्‌भुत लालित्य की छटा से अभिभूत बनाए रखता है।

लालित्य से तात्पर्य– लालित्य शब्द संस्कृत के 'लालित्य' शब्द का ही एक रूप है। 'लालित्य' की व्युत्पत्ति 'ललितस्य भावः' से की गयी है।[1] वस्तुतः 'लालित्य' 'ललित' में व्यञ प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य आदि है।[2] कालिदास ने मालविका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए ललित कला की योजना द्वारा उसके नैसर्गिक सौन्दर्य में वृद्धि की बात इस अर्थ में प्रस्तुत की थी–

''अत्याज सुन्दरी तां विद्यानेन ललितेन योजयता।
परिकल्पितो विद्यात्रा वाणः कामस्य विषदग्धः''।।[3]

लालित्य और सौन्दर्य– मन को आर्द्र करने की क्षमता जिसमें होती है वही सौन्दर्य है।[4] लालित्य और सौन्दर्य शब्द पर्यायवाची ही प्रतीत होते हैं किन्तु कलाओं के विभाजन के सन्दर्भ में 'ललित' शब्द का प्रयोग किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो स्पष्टतः ही मनुष्य निर्मित सौन्दर्य को लालित्य की संज्ञा प्रदान की है।

यहाँ हम उनके 'अशोक के फूल' निबन्ध संग्रह में संकलित निबन्धों में से विशुद्ध ललित निबन्धों को आधार बनाकर उनके ललित निबन्धों का विश्लेषण करेंगे। ललित निबन्धों की कोटि में रखा जा सकता है। अशोक के फूल आपने मेरी रचना पढ़ी, वसन्त आ गया है, मेरी जन्मभूमि तथा एक कुत्ता और एक मैना।

आत्मगत वृत्ति– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबन्धों के विषयों को आत्म स्तर पर जीते हैं, उसके तत्वों से भावनात्मक स्तर पर जुड़कर कभी आह्लादित होते हैं, तो कभी स्वयं को उदास पाते हैं।

'अशोक के फूल' निबन्ध के प्रारम्भ में ही लेखक का एक ओर उसके मनोहर पुष्पों का वर्णन करना है और दूसरी तरफ अशोक को देखकर उदास होने का संकेत –पाठक में अनायास एक जिज्ञासा उत्पन्न करता है।

'अशोक के फूल' में वे मानव की जिजीविषा के सम्बन्ध में कहते हैं कि – ''मुझे मानव जाति की दुर्दम–निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवन शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती–बहाती यह जीवन धारा आगे बढ़ी है। संशयों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है।''[5] 'वसन्त आ गया है' में उन्होंने बताया है कि ''कमजोरों में भावुकता ज्यादा होती है।''[6] इसी प्रकार 'जीवेम शरदः शतम्' में वे कहते है कि ''इसलिए कर्म तो ऐसा ही होना चाहिए।''[7]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

उनके निबन्ध 'मेरी जन्मभूमि' में लेखक ने अपने गाँव का प्रसंग सहज भाव से छोड़कर हमें अनेक अमूल्य जानकारियां दे दी है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के आँगन में फुदकने वाली लँगड़ी मैना में करूण भाव दिखाई देता है या वह अनुकम्पा दिखाती है।''[8]

रोचकता– ललित निबन्धों में रोचकता के मुख्यतः तीन आधार होती है। 1.व्यंग्य विनोद 2. रोचक कथाओं द्वारा 3.शैली के चमत्कारपूर्ण प्रयोग द्वारा 'आपने मेरी रचना पढ़ी' निबन्ध में लेखक आधुनिक तथाकथित साहित्यकारों व आलोचकों पर खुलकर व्यंग्य कसता है।

भावावेग– भावावेग आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के रचना का सहज धर्म है। अधेर भावोद्रेक और असीम आवेग खुद में कोई बड़ी चीज नहीं रहते यदि उन्हें संयमित करने वाली समाहार चेतना का अभाव हो–पंडित जी के व्यक्तित्व में संयम और समाहार की भी अद्भुत शक्ति है।[9]

अनौपचारिकता तथा वैचारिक उन्मुकता– अनौपचारिकता तथा वैचारिक अन्मुक्तता के गुण ललित निबन्धकार के लिए यह सुविधा जुटाने में सहायता करते हैं कि वह अपनी बात के प्रमाण के लिए इतिहास, विज्ञान, ज्योतिष, साहित्य, शास्त्र, लोक कहीं से की घटना विचार को उठा लाता है।

''निबन्ध शैली की उन्मुक्ता और स्वच्छन्दता को देखकर प्रायः लोग समझ लेते हैं कि निबन्ध में लेखक की कल्पना की उड़ान ही प्रमुख है, विचार–सारिणी का कोई महत्व नहीं। उड़ान के लिए ठोस भूमि का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि खुला आकाश। इस ठोस भूमि और उड़ान–कौशल का जितना सांमजस्य होगा निबन्ध की रचना ही सफल होगी।''[10]

प्रभाव की एकरूपता– ''निबन्ध का प्रथम से लेकर अन्तिम वाक्य उसके केन्द्रीय भाव से अनुबद्ध रहना चाहिए। एकसूत्रता की अनुपस्थिति में निबन्ध रचना निर्जीव होती है।[11] प्रभाव की एकरूपता का महत्व ललित निबन्ध में उतना ही है जितना किसी अन्य तत्व का।

काव्यमयी भाषा– ललित निबन्ध में भाषा शैली का महत्वपूर्ण स्थान रहता है, अपितु कहना चाहिए कि उसकी शैली ही उसे ललित निबन्धों की कोटि में रखने में मुख्य भूमिका निभाती है।

''ललित निबन्धों में अभिव्यंजना के सामान्य प्रसाधनों–मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों अलंकारों, लाक्षणिक प्रयोगों आदि की भी अवतारणा की जाती है। किन्तु ये सभी प्रयोग रचना में अन्तर्निहित विचारधारा, भावना के प्रवाह और कल्पना जगत से अनुशासित होते हैं और इनके सौन्दर्य को निखारना, इनकी मर्मस्पर्शिता की संवर्धना होता है। अभिव्यंजना के विशिष्ट प्रसाधन साहित्यिक सन्दर्भ, ऐतिहासिक प्रसंग, घटनाओं की अवतारणा, लघुकथायें, भावावेग की काव्यात्मक अभिव्यक्ति उद्धरण आदि भी कथ्य को प्रभावशाली बनाने के लिए ही संयोजित किये जाते हैं।''[12]

''ललित निबन्ध में शैली क इस महत्व को कुछ आलोचक तो इतना स्वर देते हैं कि वे स्पष्टतः स्वीकार करते हैं कि ललित निबन्ध का प्रतिपाद्य विषय चाहे जो हो उसका प्रतिपादन निबन्धकार के अह ंके माध्यम से होता है, इसलिए निबन्ध का सम्पूर्ण लालित्य, रसात्मकता, चारूता, अनुरेचकता, आकर्षण उसकी शैली में है, विषयवस्तु में नहीं।[13]

विषय – डॉ राय के उक्त कथन से कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है–

1. किसी निबन्ध को ललित निबन्ध की कोटि में लाने के लिए मात्र शैली ही पर्याप्त नहीं होती, उसमें विषय की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आचार्य शुक्ल के सन्दर्भ में उपर्युक्त कथन उस पूर्व प्रवत्र धारणाकाा भी स्वयमेव खण्डन कर देता है जो यह मानकर चली थी कि शैली हीकिसी की निबन्ध को ललित बनाती है, उसमें विषय की किसी प्रकार की कोई भूमिका नहीं होती।[14]

आचार्य शुक्ल के बहुत से निबन्ध इसी कोटि में आते हैं। जहाँ चाहकर भी वे ललित शैली का उन्मुक्त प्रयोग नहीं कर सकते। भले ही उन्होंने गम्भीर विषय के निबन्धों में भी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

विनोद का पुट दिया है तथा यह घोषित भी किया है कि ''यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को भी साथ लेकर'।[15]

निष्कर्ष– (लालित्य का महत्व)– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की यह स्पष्ट मान्यता है कि आधुनिक युग में नाना प्रकार के शोध और विश्लेषण के कारण मनुष्य के ज्ञान में अपार वृद्धि हुई है। ''नयी जानकारियों ने मानव–चित्त की धारणाओं को समझने के लिए अनेक नये उपादान जुटाये हैं। विचारशील व्यक्तियों को इन्होनें नये सिरे से सोचने के लिए विवश किया है। उनकी दृष्टि में आचार, रीति–रिवाज, धर्म और दर्शन तक पर पुनः विचार की आवश्यकता है। इन सबके साथ ही कलाओं में भी नवीन प्रकार के परिवर्तन हुए हैं।

द्विवेदी जी ने आधुनिक युग में सभी क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समावेश को अधिक महत्व प्रदान किया है। उन्होंने वेस्टरमार्क के इस सिद्धान्त को विशेष महत्व प्रदान किया है कि, ''मनुष्य एक ही जीव श्रेणी का प्राणी है।''

सन्दर्भ सूची–

1. प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद (गूगल पुस्तक ; लेखक – हजारी प्रसाद द्विवेदी)
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी,, ''हिन्दी साहित्य की भूमिका'', वर्ष 2005, पृ0 116.
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी,, ''हिन्दी साहित्य की भूमिका'', वर्ष 2005, पृ0 133.

5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, ग्रन्थावली, भाग 9, पृ0 23.
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी, ग्रन्थावली, भाग 9, पृ0 51.
7 उपरोक्त, पृ0 61.
8. अशोक के फूल (एक कुत्ता और एक मैना), पृ0 128.
9. शिवप्रसाद सिंह (सम्पा) शान्ति निकेतन से शिवालिक, पृ0 45.
10. 'समसामयिक हिन्दी साहित्य में' संकलित शोध पत्र 'ललित निबन्ध', पृ0 237.
11. ललित निबन्ध, पृ0 14.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

12. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (सम्पा) 'शैली और शैली विज्ञान' पुस्तक में संकलित शोध पत्र 'ललित निबन्धों की भाषिक संरचना' पृ0 216, 218.

13. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'ललित निबन्ध', भूमिका, पृ0 5.

14. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'ललित निबन्ध', भूमिका, पृ0 5.

15. चिन्तामणि (भाग–1) निवेदन।